

## पश्चिम एशिया के तनाव के बीच भारत का सामरिक राजनय

यह संपादकीय 06/10/2024 को द हिंदू बिजनेस लाइन में प्रकाशित "Escalation of West Asia conflict could hurt India" पर आधारित है। यह लेख ईरान और इजरायल के बीच बढ़ते तनाव पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे भारत को संयम और वार्ता का आह्वान करने के लिये प्रेरित किया जाता है, जबकि इस क्षेत्र में अपने सामरिक हितों पर प्रकाश डाला जाता है। यह इस बात पर बल देता है कि एक व्यापक संघर्ष भारत के आर्थिक हितों, ऊर्जा सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है।

### प्रलम्ब के लिये:

[ईरान और इजरायल, पश्चिम एशियाई क्षेत्र, यमन गृह युद्ध, संयुक्त राष्ट्र, संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी एजेंसी, नैटानज़ परमाणु सुविधा, होरमुज़ जलडमरूमध्य, फलिसितीनी-इजरायल संघर्ष, अरब स्प्रिंग 2011, खाड़ी सहयोग परिषद, व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते, बेल्ट एंड रोड इनशिएटिवि, इस्लामिक सहयोग संगठन](#)

### मेन्स के लिये:

पश्चिम एशिया से संबंधित मुद्दे जो भारत के हितों को प्रभावित कर रहे हैं, चर्चाओं के बावजूद पश्चिमी एशियाई देशों के साथ भारत अपने संबंधों को संतुलित करने के लिये क्या उपाय अंगीकृत कर सकता है।

[ईरान और इजरायल के](#) बीच बढ़ते तनाव ने एक बार फिर [व्यापक क्षेत्रीय संघर्ष](#) की संभावना के विषय में चर्चाएँ बढ़ा दी हैं। [पश्चिम एशियाई क्षेत्र में अपने सामरिक हितों](#) के साथ भारत ने दोनों पक्षों से संयम बरतने एवं वार्ता और राजनय के माध्यम से संकट का समाधान करने का आग्रह किया है। यद्यपि भारत ने मध्यस्थ की भूमिका निभाने की पेशकश नहीं की है, परंतु उसने [दोनों पक्षों के साथ संचार सरणिको संधारित](#) कर रखा है और गाज़ा में मानवतावादी स्थितिपर अपनी गहरी चर्चा व्यक्त की है।

हाल के वर्षों में भारत के इजरायल के साथ संबंध गहरे हुए हैं, जबकि ईरान के साथ उसके संबंधों में सहयोग और तनाव दोनों की झलक मिलती है। व्यापक संघर्ष से [भारत के आर्थिक हितों, ऊर्जा सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है।](#)

## पश्चिम एशिया में लगातार संघर्ष की स्थितियों बनी रहती है?

- **भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता और छद्म युद्ध:** ईरान और सऊदी अरब के बीच प्रतिद्वंद्विता पश्चिम एशिया में तनाव का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो इस क्षेत्र में अपने प्रभाव का विस्तार करने की दोनों देशों की महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित है।
  - यह प्रतिस्पर्धा प्रायः विभिन्न संघर्षों में वरिधी पक्षों को समर्थन देने में प्रकट होती है।
  - उदाहरण के लिये, [यमन गृह युद्ध](#) में सऊदी अरब ने ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों के विरुद्ध गठबंधन का नेतृत्व किया, जिसके परिणामस्वरूप मानवीय संकट उत्पन्न हुआ तथा [संयुक्त राष्ट्र](#) ने वर्ष 2015 से वर्ष 2022 के प्रारंभ के बीच 377,000 से अधिक लोगों की मृत्यु की सूचना दी।
  - इन छद्म युद्धों ने क्षेत्रीय शरणार्थी संकट को गहरा झटका दिया है, [संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी एजेंसी](#) की मार्च 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, 7.2 मिलियन से अधिक सीरियाई अपने ही देश में आंतरिक रूप से वसिस्थापित हैं, जहाँ 70% आबादी को मानवीय सहायता की आवश्यकता है।
  - इसके अतिरिक्त, [इजरायल ईरान को उसकी परमाणु महत्वाकांक्षाओं और हज़िबुल्लाह को समर्थन के कारण एक खतरे के रूप में देखता है](#), जिसके कारण साइबर युद्ध की घटनाएँ होती हैं और सीरिया में ईरानी ठिकानों पर हवाई हमले होते हैं।
    - वर्ष 2022 में, ईरान ने इजरायल पर अपनी [नैटानज़ परमाणु सुविधा](#) को नुकसान पहुँचाने का आरोप लगाया।
    - इजरायल ने हाल ही में दावा किया कि उसने [लेबनान के बेरूत में एक हमले में हज़िबुल्लाह के एक वरिष्ठ कमांडर को मार गिराया है।](#)
      - हाल ही में [लेबनान में हुए पेजर हमले के लिये भी कथित तौर पर इजरायल को ज़िम्मेदार ठहराया जा रहा है।](#)
- **धार्मिक संप्रदायवाद और असमता संघर्ष:** सुन्नी-शिया विभाजन पश्चिम एशिया में कई संघर्षों का एक प्रमुख कारक है, जो सांप्रदायिक हिंसा और राजनीतिक संघर्षों को उत्प्रेरित करता है।
  - यहाँ की जनसंख्या में लगभग 85% सुन्नी और 15% शिया हैं तथा ईरान और सऊदी अरब इन गुटों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

- वर्ष 2003 में अमेरिकी नेतृत्व वाले आक्रमण से लेकर वर्ष 2011 के मध्य तक युद्ध-संबंधी कारणों से इराक में लगभग पाँच लाख लोग मारे गए।
- बहरीन ने सुन्नी राजशाही द्वारा शिया बहुसंख्यक आबादी पर दमन के कारण भी तनाव का अनुभव किया है, विशेष रूप से वर्ष 2011 के अरब स्प्रिंग वरिध प्रदर्शनों के बाद से।
  - ये सांप्रदायिक संघर्ष क्षेत्र की अस्थिरता और हिसा में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।
- **तेल की प्रचुरता और संसाधन नयित्करण: पश्चिमि एशिया में विश्व के लगभग 48% प्रमाणति तेल नकिषेप** वदियमान हैं, जसिसे इन संसाधनों पर नयित्करण एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा बन गया है।
  - तेल पर आर्थिक नरिभरता ने आंतरिक और बाह्य संघर्षों को उत्प्रेरति किया है, जैसे **इराक-कुवैत संघर्ष**, जो तेल नयित्करण से प्रेरति था और जसिके कारण खाड़ी युद्ध हुआ।
  - ओपेक के नरिणय तेल के वैश्विक मूल्यों को आज भी प्रभावति करते हैं। **ओपेक+** तेल गठबंधन के सदस्यों ने **अक्टूबर 2024 में नरिधारति 180,000 बैरल प्रतदिनि उत्पादन बढ़ाने की योजना को स्थगति कर दिया है**, जसिसे संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य तेल-उपभोक्ता देशों में संदेह उत्पन्न हो गया है।
  - इसके अतरिकित, **होरमुज़ जलडमरूमध्य जैसे सामरिक जलमार्ग तेल पारगमन के लयि महत्त्वपूर्ण हैं। विश्व की कुल तेल खपत का लगभग पाँचवाँ हिस्सा रोज़ाना इस जलडमरूमध्य से होकर गुज़रता है।**
    - इस चोकपॉइंट को बंद करने की ईरान की धमकियों से अमेरिका और उसके सहयोगियों के साथ सैन्य तनाव बढ़ गया है।



- **औपनिवेशिक वरिसत और कृत्रमि सीमाएँ:** पश्चिमि एशिया में औपनिवेशिक वरिसत, विशेष रूप से **साइक्स-पिकॉट समझौते** ने मनमानी सीमाएँ स्थापति की, जनिमें नृजातीय और जनजातीय वभिजनों की उपेक्षा की गई, जसिके परिणामस्वरूप दीर्घकालिक अस्थिरता उत्पन्न हुई।
  - इसके परिणामस्वरूप समुदाय राष्ट्रीय सीमाओं के पार वभिजति हो गए और उन्हें एकीकृत राष्ट्रीय अस्मति के अभाव में बहुजातीय राज्यों में रहने के लयि बाध्य होना पड़ा।
  - स्वायत्तता के लयि कुरद संघर्ष इस मुद्दे का उदाहरण है, क्योंकि **कुरद तुर्की, सीरिया, इराक और ईरान में स्वतंत्रता चाहते हैं**, जसि इराक में वर्ष 2017 के जनमत संग्रह द्वारा प्रकट किया गया था, जसिका पड़ोसी देशों द्वारा वरिध किया गया था।
  - **फलिसितीनी-इज़रायल संघर्ष की जड़ें भी ब्रिटिश शासनादेश में हैं**, जसिके कारण जारी वविादों के परिणामस्वरूप लाखों लोग वसिथापति हो रहे हैं।
    - **सितंबर 2024 तक स्थिति काफी खराब हो चुकी है**, इज़रायल की घेराबंदी के कारण **83% खाद्य सहायता गाज़ा तक नहीं पहुँच पा रही है।**
- **सत्तावादी शासन और राजनीतिक दमन:** कई पश्चिमि एशियाई देशों में **सत्तावादी शासन है**, जसिमें राजशाही और सैन्य तानाशाही शामिल हैं, जसिके कारण व्यापक असंतोष तथा राजनीतिक दमन होता है।
  - **वर्ष 2011 में अरब स्प्रिंग ने** महत्त्वपूर्ण वदिरोहों को जन्म दिया, परंतु कई शासनों ने क्रूर दमनात्मक कार्रवाइयों के साथ प्रतउत्तर दिया।
  - मार्च 2024 तक, रूस के समर्थन से, **असद शासन ने उत्तर-पश्चिमि सीरिया में हमले किये हैं**, जसिके परिणामस्वरूप 500 से अधिक नागरिक हताहत हुए हैं और 120,000 से अधिक लोग वसिथापति हुए हैं।
  - मानवाधिकार संगठनों ने अनेक दुरव्यवहारों का दस्तावेज़ीकरण किया है, जो इस क्षेत्र में लोकतांत्रिक प्रतनिधित्व के लयि संघर्ष को और अधिक स्पष्ट करता है।
- **वदिशी हस्तक्षेप और सैन्य उपस्थिति:** तेल और क्षेत्रीय स्थिरता में अपने सामरिक हतियों के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका ने पश्चिमि एशिया में महत्त्वपूर्ण सैन्य उपस्थिति बनाए रखी है।
  - वर्ष 2001 से **अमेरिका अफगानिस्तान, इराक और सीरिया में संघर्षों में शामिल रहा है**, जसिके प्रायः अनपेक्षति परिणाम सामने आते

हैं, जिससे स्थानीय लोगों में असंतोष उत्पन्न होता है।

- सामूहिक विध्वंस के हथियारों को नष्ट करने और लोकतंत्र को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इराक पर वर्ष 2003 में किया गया आक्रमण, लंबे समय तक अस्थिरता, सांप्रदायिक हिंसा और ISIL जैसे चरमपंथी समूहों के उदय का कारण बना।
- जून 2019 के अंत में, ईरान ने होर्मुज़ जलडमरूमध्य में एक अमेरिकी ग्लोबल हॉक ड्रोन को नष्टिप्रभावी करके नीचे गिरा डाला तथा अमेरिकी राष्ट्रपति ने साइबर हमले और नए प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया।

## पश्चिम एशिया के मुद्दों का भारत पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

- **ऊर्जा सुरक्षा और तेल आयात:** पश्चिम एशिया भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिये महत्वपूर्ण है, जो इसके कच्चे तेल के आयात का 60% से अधिक आपूर्ति करता है।
  - वर्ष 2022-23 में इराक रूस के बाद भारत को दूसरा सबसे बड़ा कच्चा तेल आपूर्तिकर्ता बन गया। इस क्षेत्र में राजनीतिक अस्थिरता के कारण प्रायः तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव होता है, जिसका भारत की अर्थव्यवस्था पर काफी प्रभाव पड़ सकता है।
  - ब्रेंट क्रूड आयल की कीमतें 80-85 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रही हैं, जिससे भारत की आयात लागत और मुद्रास्फीति प्रभावित हो रही है।
    - इन जोखिमों को कम करने के लिये भारत सक्रिय रूप से अपने ऊर्जा स्रोतों में विविधता ला रहा है, जिसमें रूस, अमेरिका और लैटिन अमेरिका के साथ समझौते शामिल हैं।
  - भारत पहले ही पश्चिम एशियाई संघर्षों के प्रभावों को अनुभव कर चुका है, क्योंकि इस क्षेत्र से कच्चे पेट्रोलियम आयात में इसकी हसिसेदारी वृत्त वर्ष 2022 में 34% से घटकर वृत्त वर्ष 2023 में 30.9% और वृत्त वर्ष 2024 में लगभग 23% हो गई है।
- **प्रवासी भारतीयों से प्राप्त विप्रेषण:** पश्चिम एशिया में 80 लाख से अधिक संख्या में प्रवासी भारतीय धन विप्रेषण का महत्वपूर्ण स्रोत है।
  - वर्ष 2021 में, भारत को लगभग 87 बिलियन अमेरिकी डॉलर का विप्रेषण प्राप्त हुआ, जिसमें से लगभग 50% खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) देशों से प्राप्त हुआ।
  - सऊदी अरब में "सऊदीकरण" नीतिके कारण उत्पन्न आर्थिक मंदी इन विप्रेषणों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है तथा केरल जैसे राज्यों के उन परिवारों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है जो इस आय पर बहुत अधिक निर्भर हैं।
  - कोविड-19 महामारी के कारण अनेक भारतीय कामगारों को घर लौटना पड़ा और यद्यपि स्थिति सामान्य हो गई है, परंतु जारी क्षेत्रीय संघर्षों के कारण नौकरी की स्थिरता और विप्रेषण प्रवाह को खतरा बना रह सकता है।
- **व्यापार संबंध और आर्थिक प्रभाव:** खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) भारत के सबसे महत्वपूर्ण व्यापार साझेदारों में से एक है।
  - वृत्त वर्ष 2023-24 के दौरान भारत-GCC द्विपक्षीय व्यापार 161.59 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। भारत का निर्यात 56.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा।
  - क्षेत्रीय अस्थिरता के कारण व्यापार संबंधों में कोई भी व्यवधान भारत के निर्यात क्षेत्र और खाड़ी में खाद्य आपूर्ति पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।
  - इसके अतिरिक्त, संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों के साथ भारत के व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते का उद्देश्य व्यापार में वृद्धि करना है, परंतु भू-राजनीतिक तनावों के कारण इसमें बाधा आ सकती है।
- **समुद्री सुरक्षा और व्यापार मार्ग:** होर्मुज़ जलडमरूमध्य और बब अल-मन्देब जैसे सामरिक समुद्री मार्ग भारत के व्यापार तथा ऊर्जा आयात के लिये महत्वपूर्ण हैं।
  - इन जलमार्गों पर समुद्री डकैती या राज्य प्रायोजित हमलों से भारत की व्यापार सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।
  - होर्मुज़ जलडमरूमध्य एक महत्वपूर्ण चोकपॉइंट बना हुआ है। अप्रैल 2024 में ईरान द्वारा इज़राइल से जुड़े एक मालवाहक पोत को ज़ब्त करना, जिसमें 17 भारतीय नागरिक सवार थे, इस स्थिति में भारत की भागीदारी को रेखांकित करता है।
- **आतंकवाद और राष्ट्रीय सुरक्षा:** पश्चिम एशिया में अस्थिरता ISIS, अल-कायदा और हजिबुल्लाह जैसे चरमपंथी संगठनों के लिये आधार का निर्माण करता है, जो कभी-कभी भारत सहित दक्षिण एशिया से रंगरूटों की भरती करते हैं।
  - FATF की हालिया रिपोर्ट में जम्मू-कश्मीर में ISIS और अलकायदा से संबंधित समूहों से भारत के लिये आतंकवादी खतरे पर प्रकाश डाला गया है।
- **सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध:** भारत और पश्चिम एशिया के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध द्विपक्षीय संबंधों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं:
  - भारत वशिव की तीसरी सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी (लगभग 200 मिलियन) का निवास स्थान है, जिससे पश्चिम एशिया में विकास, विशेष रूप से इस्लामी पवित्र स्थलों के संबंध में, घरेलू महत्त्व का हो गया है।
- **भू-राजनीतिक संरक्षण और महाशक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता:** पश्चिम एशिया में चीन का बढ़ता प्रभाव, विशेष रूप से बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से, भारत के लिये चुनौतियाँ उत्पन्न कर रहा है, विशेषकर तब जब चीन, ईरान और सऊदी अरब के साथ अपने संबंधों को सुदृढ़ कर रहा है।
  - क्षेत्र में चीन का बढ़ता प्रभाव, जिसका उदाहरण मार्च 2023 में ईरान-सऊदी अरब के बीच संबंधों में मध्यस्थता है, भारत के सामरिक हितों के लिये चुनौती है।
  - जुलाई 2022 से I2U2 समूह (भारत, इज़राइल, संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका) में भारत की भागीदारी इसकी पश्चिम एशिया नीति में एक नए चरण का प्रतीक है, परंतु इज़राइल और संयुक्त अरब अमीरात के प्रतिद्वंद्वी देशों के साथ सामंजस्य को संतुलित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है।

## चिंताओं के बावजूद पश्चिमी एशियाई देशों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करने के लिये भारत क्या उपाय कर सकता है?

- सामरिक स्वायत्तता और गुटनिरपेक्षता का अंगीकरण: भारत को सऊदी अरब, ईरान, इज़रायल और संयुक्त अरब अमीरात जैसे प्रमुख

अभिकर्ता देशों के साथ सुदृढ़ द्विपक्षीय संबंधों को संवर्द्धित करके पश्चिम एशियाई संघर्षों में अपनी गुटनरिपेक्षता की नीतिका अनुरक्षण करना चाहिये।

- किसी भी विशेष गुट के साथ प्रत्यक्ष गठबंधन से बचकर भारत क्षेत्रीय प्रतदिवंद्विता में उलझे बनिा उससे नपिट सकता है।
- ईरान-सऊदी अरब प्रतदिवंद्विता और इज़रायल-फलिसितीन संघर्ष जैसे संवेदनशील मुद्दों पर नरितर तटस्थ रुख अपनाने से भारत की छवि एक शांति-प्रवर्तक राष्ट्र और सभी संबंधित पक्षों के लिये एक वशिवसनीय भागीदार के रूप में और अधिक सुदृढ़ होगी।
- **आर्थिक और ऊर्जा संबंधों का सुदृढ़ीकरण:** यद्यपि पश्चिम एशिया भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिये महत्त्वपूर्ण बना हुआ है, फरि भी देश को किसी एक क्षेत्र पर नरिभरता कम करने के लिये अपने ऊर्जा आयात में विविधता लाने को प्राथमिकता देनी चाहिये।
  - नवीकरणीय ऊर्जा क्षमताओं को बढ़ाने से समय के साथ पश्चिम एशियाई तेल पर नरिभरता कम करने में सहायता मिलेगी।
    - GCC देशों के साथ व्यापार और निवेश संबंधों को सुदृढ़ करना आवश्यक है तथा महत्त्वपूर्ण लाभ के लिये प्रौद्योगिकी, रक्षा और आधारिक संरचना जैसे नए क्षेत्रों का अन्वेषण करना आवश्यक है।
  - भारत-UAE व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (CEPA) में व्यापार को संवर्द्धित करने की क्षमता है तथा अन्य GCC देशों के साथ इसी प्रकार के समझौते भारत के आर्थिक हितों का संरक्षण करने में सहायक हो सकते हैं।
- **राजनयिक संपर्क और बहुपक्षीय सहयोग का वसितार:** भारत को पश्चिम एशियाई देशों के साथ नयिमति उच्च स्तरीय संपर्क के माध्यम से द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करना जारी रखना चाहिये।
  - खाड़ी सहयोग परिषद (GCC), इस्लामिक सहयोग संगठन (OIC) (पर्यवेक्षक के रूप में) और क्वाड (जसिमें भारत, इज़रायल, संयुक्त अरब अमीरात और अमेरिका शामिल हैं) जैसे क्षेत्रीय बहुपक्षीय मंचों में सक्रिय भागीदारी से एक रचनात्मक क्षेत्रीय अभिकर्त्ता के रूप में भारत की भूमिका सुदृढ़ होगी, जसिसे समुद्री सुरक्षा और आतंकवाद-नरिोध जैसे मुद्दों पर सहयोग संभव होगा।
  - इसके अतरिकित, I2U2 फोरम (भारत, इज़राइल, संयुक्त अरब अमीरात और अमेरिका) का लाभ उठाकर खाद्य सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में सहयोग को सुवधाजनक बनाया जा सकता है।
- **रक्षा और सुरक्षा सहयोग वर्द्धन:** होरमुज़ जलडमरूमध्य जैसे चोकपॉइंट्स के सामरिक महत्त्व को देखते हुए, भारत को हदि महासागर और अरब सागर में अपनी नौसैनिक उपस्थिति को सुदृढ़ करना चाहिये।
  - ओमान, संयुक्त अरब अमीरात और अमेरिका के साथ संयुक्त अभ्यास के माध्यम से नौसैनिक सहयोग बढ़ाने से इन महत्त्वपूर्ण समुद्री मार्गों के संरक्षण में भारत की क्षमता बढ़ सकती है।
  - पश्चिम एशियाई देशों के साथ द्विपक्षीय रक्षा समझौतों का वसितार करना, संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण, खुफिया जानकारी साझा करना और आयुधों की बिक्री पर ध्यान केंद्रित करना महत्त्वपूर्ण होगा।
  - सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और इज़रायल जैसे देशों के साथ आतंकवाद-रोधी सहयोग को सुदृढ़ करना, विशेष रूप से खुफिया जानकारी साझा करने, साइबर सुरक्षा और कटटरपंथ-रोधी प्रयासों में, चरमपंथी समूहों से संभावित खतरों को कम कर सकता है एवं भारत की आंतरिक सुरक्षा को बढ़ा सकता है।
- **ऊर्जा सुरक्षा और नवीकरणीय ऊर्जा पहल को प्राथमिकता:** पश्चिम एशियाई संघर्षों से उत्पन्न होने वाले जोखिमों को कम करने के लिये, भारत को अपनी सामरिक पेट्रोलियम रजिर्व (SPR) क्षमता का वसितार करना चाहिये।
  - भारत की दृष्टिभंगलोर में एक नए सामरिक कचचे तेल के नकिषेप पर है। यह तेल आपूर्ति में व्यवधान के वरिद्ध एक मध्यवर्तन प्रदान करेगा, जैसा कि वरिष 2019 में सऊदी तेल सुवधा हमलों के दौरान हुआ था।
  - स्वच्छ ऊर्जा में क्षेत्र की बढ़ती रुचि को देखते हुए, नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं पर पश्चिम एशियाई देशों के साथ सहयोग करना आवश्यक है।
  - संयुक्त अरब अमीरात के साथ सौर ऊर्जा पर संयुक्त पहल या सऊदी अरब के साथ हाइड्रोजन ईंधन परियोजनाएँ अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के तहत भारत के लक्ष्यों के अनुरूप होंगी तथा इसकी ऊर्जा विविधीकरण कार्यनीति में योगदान देंगी।
- **सांस्कृतिक राजनय और लोगों के मध्य संबंधों को प्रोत्साहन:** पश्चिम एशिया में 80 लाख से अधिक भारतीय रहते हैं, इसलिये भारत को उनके कल्याण, विशेष रूप से श्रम सुधारों के संबंध में वकालत जारी रखनी चाहिये।
  - राजनयिक मशिनों को भारतीय श्रमिकों के अधिकारों का रक्षण तथा आवश्यकता पड़ने पर सुरक्षित प्रत्यावर्तन सुनिश्चित करने के लिये मेज़बान सरकारों के साथ सक्रिय रूप से संपर्क करना चाहिये।
  - सांस्कृतिक उत्सवों और कार्यक्रमों का आयोजन (जैसे IPL नीलामी 2025 सऊदी अरब में आयोजित होने की संभावना है) क्षेत्र में सॉफ्ट पावर का नरिमाण करने और सद्भावना को संवर्द्धित करने में सहायता कर सकता है।
  - इसके अतरिकित, भारत पश्चिम एशिया के छात्रों के लिये तकनीकी प्रशिक्षण और शैक्षिक छात्रवृत्त प्रदान कर सकता है, जसिसे उच्च शिक्षा और कौशल विकास के गंतव्य के रूप में इसकी प्रतषिठा बढ़ेगी, लोगों के बीच दीर्घकालिक संबंध संवर्द्धित होंगे और क्षेत्र में सद्भावना का विकास होगा।

## नषिकर्ष:

पश्चिम एशिया में भारत के सामरिक हितों के लिये क्षेत्रीय तनावों की जटलिताओं का समाधान करने के लिये संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भारत के लिये मुद्दा आधारित राजनय और बहुपक्षीय सहयोग को प्राथमिकता देना आवश्यक होगा ताकि वह संघर्ष से ग्रस्त इस क्षेत्र में एक स्थिर शक्ति के रूप में उभर सके, जसिसे क्षेत्रीय शांति और स्थिरता में योगदान करते हुए अपने राष्ट्रीय हितों का संरक्षण कर सके।

Q. पश्चिम एशिया प्रायः नरितर भू-राजनीतिक उथल-पुथल का क्षेत्र रहा है। इस नरितर अस्थिरता के पश्च में नहिति कारकों का वशिलेण कीजिये और स्पष्ट कीजिये कि भारत इस क्षेत्र के साथ अपने संबंधों में कैसे संतुलित दृष्टिकोण को संधारित कर सकता है।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित् वर्ष के प्रश्न (PYQ)

????????

प्रश्न. दक्षिण-पश्चिमी एशिया का नमिनलखिति में से कौन-सा एक देश भूमध्यसागर तक फैला नहीं है?

- (a) सीरिया
- (b) जॉर्डन
- (c) लेबनान
- (d) इज़राइल

उत्तर: b

प्रश्न. कभी-कभी समाचारों में उल्लिखित पद "टू-स्टेट सोल्यूशन" कसिकी गतविधियों के संदर्भ में आता है ?

- (a) चीन
- (b) इज़राइल
- (c) इराक
- (d) यमन

उत्तर: b

??????

प्रश्न. "भारत के इज़राइल के साथ संबंधों ने हाल में एक ऐसी गहराई एवं वविधिता प्राप्त कर ली है, जसिकी पुनर्वापसी नहीं की जा सकती है।" वविचना कीजिये। (2018)

